फरीदाबाद

मजदूर समाचार

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

नई सीरीज नम्बर 294 1/- दिसम्बर 2012

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
<http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

लौटते हैं 18 जुलाई 2012 में
मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों का व्यवहार

तनखा, वेतन, दिहाड़ी, पगार, वेज, सैलेरी, उजरत के दायरे में प्रवेश से पहले और दायरे में रहने के दौरान जीवन कैसे परिवर्तित होगा इसके बारे में उत्सुकता-उत्साह और शक-शंका-शुबहा की गहरी धारा बनी रहती है। जीवित रहने और बेहतर जीवन, बेहतरीन जीवन की वास्तविकता तथा कल्पना के लिये हम अपने समय का एक अंश जो बिक्री करते हैं उसका सौदा सदा ही अस्थिर होता है, अस्थिर रहता है। अपने समय के एक अंश को हम क्यों बेच रहे हैं और किसलिये बेच रहे हैं यह प्रश्न हर समय हमारे सम्मुख जीवित रहता है, बना रहता है।

यह अस्थिरता, यह उत्साह, यह शक, यह क्यों-किसलिये का सदा मुँह बाये सवाल कुछ मायनों में आम बात हैं। यह बहुत-ही सामान्य हैं और हम मान कर चलते हैं कि यह हमारे जीवन को ढालते हैं, गति देते हैं, रोकते हैं। इन पर चर्चायें लगातार चलती रहती हैं। यह ध्यान देने की बात है कि कई बार अकेले के तौर पर और समूह के तौर पर हम बेचैनी महसूस करते हैं इन चर्चाओं के फायदा-नुकसान-मजबूरी की चौखट में कैद हो जाने में। और, हमें अहसास रहता है कि बेहतरीन जीवन के फैलाव में लाभ-हानि-बेचारगी की सोच-प्रयास बाधा हैं।

इस बेचैनी, इन उत्साहों, इन शंकाओं को कई सचेत आम समझ की धारायें समझने-समझाने के दावे करती हैं। तन थके हैं, मन मरे हैं, दृष्टि नाक तक है, समूह-सामुहिकता ओझल है, तन-मन घायल हैं, कल्पनायें सिमटी-सिकुड़ी हैं, इसलिये सहायता एक अनिवार्य आवश्यकता है। गुमराह हो जाते हैं, एकता नहीं है, भटक जाते हैं, भड़क जाते हैं, इसलिये सम्भालने वाले चाहियें। ड्युटी के बाहर भला कोई जीवन जी रहे हैं? प्रवचन आवश्यक हैं। सचेत आम समझ व्यवहार में व्यापक तौर पर नकारी गई हैं पर विचारों में काफी फैली हुई हैं।

समय पर विवाद, समय के लिये जूझते लोग, समय किसलिये पर मन्थन वाली जीवन की धुरी आज पूरी स्पष्टता से हमारे सम्मुख है। सचेत-अचेत, कोई धारा इसे ओझल नहीं कर सकती, ढक नहीं सकती, छिपा नहीं सकती। क्यों?

बेहतर जीवन के लिये अपने समय का जो सौदा हम उत्साह और शंका से करते हैं वह लड़खड़ाने लगा है। बेहतर मानी क्या? तनखा ज्यादा? क्या काम के बोझ में कमी? क्या दबाव में ढील? आने-जाने के लिये प्रबन्ध? क्या रहने के लिये मकान का प्रबन्ध? डाँट-फटकार में कमी? नौकरी की सुरक्षा? चिकित्सा में योगदान? पदोन्नति के शीघ्र व अधिक प्रावधान? भोजन का उचित प्रबन्ध? मनोरंजन के लिये साधन व समय? बच्चों की शिक्षा में योगदान?

ऊपर चिन्हित बिन्दुओं को जब व्यवहार में सामुहिक तौर पर नकारा गया तब लगता है कि बेहतर, बेहतरीन सामुहिक जीवन की कोई अनोखी-अपरिचित कल्पना आकार ग्रहण कर रही थी। इस सन्दर्भ में "मजदूर समाचार" के नवम्बर 2011 अंक (नई सीरीज नम्बर 281) में छपा था :

मानेसर में एक युवा साथी : "रुटीन से परे जीवन के बारे में पहली बार सोचा है, फुर्सत में ढँग से सोचा है।" हजारों साथियों ने कई फैक्ट्रियों में, कई बस्तियों में, कई घरों में, कई ठियों-अड्डों पर इन पाँच महीनों के दौरान एक नई गति और नई ऊर्जा से जीवन के बारे में सोचा है।

जून में फैक्ट्री के अन्दर, अक्टूबर में फैक्ट्रियों के अन्दर मजदूरों ने मशीनों की गति और शोर को थामा। फुर्सत से एक-दूसरे को देखा, नये ढँग से एक-दूसरे को सुना। मशीनों को थाम कर इन्सानों ने नये समय का उत्पादन आरम्भ किया। यह नया समय व्यवस्था की विषय-वस्तुओं से बाहर है।

फैक्ट्रियों पर कब्जा किये मनुष्यों का मिल कर बैठना-पसरना, राग-रागिनी गाना, खूब हँसना, इत्मिनान से खूब बातें करना, जीवन के बारे में सामुहिक विमर्श, उकसाने पर नाचने लगना, हजारों के बीच बातें करते-करते सो जाना, बिना अलार्म के सपने देखना, नये क्षितिज को देखना — इस सब से हुआ नये समय का उत्पादन।

शॉप फ्लोर-असेम्बली लाइन जीवन के इस हस्तक्षेप से, नये समय के इस उत्पादन से हर वक्त छिद्रित रहेंगे।

फैक्ट्रियों-कार्यस्थलों की एक झलक

ड्राइवर : दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद-नोएडा के इर्द-गिर्द स्टाफ को, मजदूरों को निवास स्थानों से फैक्ट्रियों-दफ्तरों को लाती-ले जाती ट्रैवल्स कम्पनियों के ड्राइवरों की 10 से 16-18 घण्टे रोज ड्युटी हो जाती है। ओवर टाइम का कोई भुगतान नहीं करते। महीने के 8000 से 9500 रुपये देते हैं। देखा जाये तो 8 घण्टे की ड्युटी में तनखा चार-साढे चार हजार रुपये पड़ती है। वैसे, टैन्डर भरते समय ड्राइवर की तनखा 10,000 से 18,000 रुपये लिखते हैं। साप्ताहिक अवकाश के अलावा कोई छुट्टी नहीं, छुट्टी करने पर पैसे काटते हैं। जाम लगते रहते हैं, देर से पहुँचाने पर ड्राइवर पर 250 से 500 रुपये जुर्माना लगा देते हैं। समय पर पहुँचाने के फेर में ओवर टेकिंग, ओवर स्पीड, रेड लाइट जम्प करने पर होते चालान का भुगतान ड्राइवर के मत्थे। जरा-सा नुकसान होने पर अभद्र व्यवहार और पैसे भी काट लेते हैं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं। घायल होने पर ड्राइवर को साधारण उपचार के बाद घर भेज देते हैं और बैठे दिनों के पैसे नहीं देते। कॉल सैन्टरों में लगे ड्राइवरों को तो आमतौर पर तनखा भी देरी से देते हैं। अधिकतर ड्राइवरों की ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। जिन बड़ी टूर एण्ड ट्रैवल्स कम्पनियों में ड्राइवरों की तनखा से यह पैसे काटते हैं उन में ड्राइवरों को पी.एफ. नम्बर नहीं बताते और पता ही नहीं चलता कि पैसे भविष्य निधि संगठन में जमा करते हैं अथवा नहीं। ढाई सौ ड्राइवरों वाली ***छवि टूर एण्ड ट्रैवल्स***, 250 ड्राइवरों वाली ***सागर***, 600 ड्राइवरों वाली ***सीहॉक टूरिस्ट ट्रैवल्स***, 400 ड्राइवरों वाली ***राव टूर एण्ड ट्रैवल्स***, 300 ड्राइवरों वाली ***डी टी एस***, 1000 ड्राइवरों वाली ***चानसन टूर एण्ड ट्रैवल्स*** में ऊपर वाली बातें हैं। इन कम्पनियों में कण्डक्टरों को तो महीने में 4000-5000 रुपये में चौबीसों घण्टे ड्युटी करनी पड़ती है। ट्रैवल्स कम्पनियों में ऑफिस वरकर तो लावारिस की तरह हैं। फिर, तेल की जगह सी एन जी का प्रयोग हर समय अनहोनी की आशंका लिये है — इधर दिवाली बाद किसी इलेक्ट्रिक फाल्ट से लगी आग से सीहॉक कम्पनी की तीन बस जल कर राख हो गई और एक कण्डक्टर काफी जल गया। जी पी एस सिस्टम इधर ड्राइवर-गाड़ी पर हर समय निगाह रखने का जरिया है — कब कहाँ हैं, कितनी रफ्तार है को साहब जब चाहें देख सकते हैं।''

के आर एफ मजदूर : ''403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 400 कर्मचारी काम करते हैं जिनमें 200 कर्मचारी लिमिटेड हैं और 200 कर्मचारी कैजुअल हैं। दो सौ कर्मचारियों की ई.एस.आई. व पी.एफ. काटते हैं और 200 कर्मचारियों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जब कोई लेबर अफसर चैकिंग के लिये आते हैं तब कैजुअल कर्मचारियों की चुपके से छुट्टी कर दी जाती है। इस कम्पनी में हैल्पर की 8 घण्टे की सैलरी 3200 से 3500 रुपये है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की चलती हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से दिया जाता है। पेमेन्ट स्लिप पर सैलेरी हरियाणा ग्रेड दिखलाते हैं और पेमेन्ट काट कर देते हैं, सिगनेचर पूरी पेमेन्ट पर कराया जाता है। उस जगह पर कच्ची पेन्सिल से लिख देते हैं और बाद में उसे मिटा देते हैं। पी.एफ. स्लिप नहीं देते, पता नहीं चलता कि कम्पनी पी.एफ. जमा करती है या नहीं। फैक्ट्री में किसी तरह का हादसा होने पर कम्पनी कुछ नहीं देती। काम करते वक्त हाथ-पैर मशीन से कट जाती है या जल जाती है तो कम्पनी एक-दो दिन दवा करा देती है और बाद में मना कर देती है। फैक्ट्री में लैट्रीन और बाथरूम की सफाई सही ढँग से नहीं होती। कम्पनी अपने पेपरों में सरकार को सारी सुविधा दिखलाती है।. .... रोटी के लिये 15 रुपये और चाय के लिये 2 रुपये 75 पैसे कम्पनी देती है जबकि चाय आज 6 रुपये की हो गई है। इस फैक्ट्री में कपड़े पर लगने वाली लेबल, लेस, बटन हैंगर इत्यादि बनती हैं। कुछ कर्मचारियों से पूरे वर्ष 16 घण्टे रोज काम लिया जाता है। अगर कोई सरकारी चैकिंग आनी होती है तब एक सप्ताह पहले से सभी वरकरों को बुला कर जनरल मैनेजर मीटिंग करते हैं। सिखलाया जाता है कि सैलेरी हरियाणा ग्रेड बताना, ओवर टाइम नहीं होता, 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं, हमें किसी तरह की परेशानी नहीं है, कम्पनी सारी सुविधा देती है। जबकि इस कम्पनी में 10-15-18-20 सालों से काम कर रहे कर्मचारियों की सैलेरी अभी 5000 रुपये भी नहीं है। हैल्परों को 3200-3500 रुपये और कारीगरों को 4000 से 4500 रुपये दिये जाते हैं। रात में काम करते हुये अगर नींद की झपकी आ जाये तो पूरी दिहाड़ी काट ली जाती है। माल गलत बनने पर कारीगरों की तनखा से पैसे काट लिये जाते हैं।''

दिल्ली मैट्रो रेल श्रमिक : ''दिल्ली-गुड़गाँव-नोएडा में मैट्रो के 149 स्टेशन हैं। इक्कीस ठेकेदारों के जरिये रखे 4900 मजदूर इन स्टेशनों पर काम करते हैं। ग्रुप 4 और बेदी एण्ड बेदी कम्पनियों के गार्ड हैं — गार्डों को साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के तीसों दिन ड्युटी। मैट्रो स्टेशनों पर 3200 सफाई कर्मी काम करते हैं। इन सफाई कर्मियों को महीने के 5000 रुपये देते हैं और कहते हैं कि यह राशि ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काट कर है। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन अकुशल श्रमिक के लिये इस समय 7254 रुपये है — साफ है कि दिल्ली मैट्रो रेल कॉरपोरेशन में कार्य कर रहे सफाई कर्मचारियों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। फिर भी, शिकायत पर कोई कार्रवाई करने की बजाय दिल्ली सरकार के असिस्टेन्ट लेबर कमिश्नर ने 26 नवम्बर को श्रम विभाग अधिकारियों को एक महीने में जाँच करने को कहा है। और, दक्षिण दिल्ली के भविष्य निधि आयुक्त ने दिल्ली मैट्रो रेल द्वारा ठेकेदार केशव सेक्युरिटी के जरिये रखे 600 सफाई कर्मियों के पी.एफ. रिकार्ड को फर्जी पाया है।''

क्लच ऑटो कामगार : ''प्लॉट ए-1 सैक्टर-27 सी (12/4 मथुरा रोड), फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौते में बोनस बीस प्रतिशत है पर मैनेजमेन्ट इस बार 8.33 प्रतिशत की बात करने लगी तो मजदूरों ने इनकार कर दिया। मामला श्रम विभाग पहुँचा — 7, 9, 12 नवम्बर की तारीखें रही। बेटा डायरेक्टर 10 नवम्बर को यूनियन लीडरों से बोला कि हड़ताल मत करना, फैक्ट्री चलायेंगे — इस वर्ष 50 दिन की हड़ताल हुई। तनखा और बोनस की कहने पर इशारा पिता मैनेजिंग डायरेक्टर की तरफ कर दिया। दस नवम्बर को ही मैनेजमेन्ट बोली कि 35 मशीनें फैक्ट्री से बाहर ले जाने दो, 20 प्रतिशत बोनस देंगे। इनकार। श्रम विभाग में 12 नवम्बर को साँय 5 बजे 20 प्रतिशत बोनस देने का तय हुआ पर तब तक सब स्थाई मजदूर जा चुके थे क्योंकि सुबह 8 से साँय 4½ की अब एक ही शिफ्ट है — दिवाली बाद, 15 नवम्बर को स्थाई मजदूरों को बोनस दिया।

''क्लच ऑटो में 400-600 कैजुअल वरकर होते थे पर अब एक भी नहीं है — 365 स्थाई मजदूर और 288 स्टाफ के लोग ही हैं। दिवाली से सप्ताह-भर पहले से कैजुअल वरकरों ने बोनस की पूछने फैक्ट्री गेट आना आरम्भ किया। टाइम ऑफिस वाले टरका देते थे। बेटी डायरेक्टर 12 नवम्बर को साँय 5 बजे गाड़ी में फैक्ट्री गेट से निकल रही थी तब 50 के करीब कैजुअल वरकरों ने गाड़ी रोक कर खूब गालियाँ दी।

''क्लच ऑटो में टारगेट 123 मानी एक करोड़ 23 लाख रुपये का उत्पादन प्रतिदिन का था और मैनेजिंग डायरेक्टर ने 132 का नारा दिया था। तब 790 मजदूर तीन शिफ्टों में काम करते थे। अब मैटेरियल ही नहीं रहता और 365 मजदूर प्रतिदिन 9 लाख रुपये का उत्पादन करते हैं। अक्टूबर की तनखा आज 27 नवम्बर तक मजदूरों को देनी भी आरम्भ नहीं की है। स्टाफ को मजदूरों को देने के बाद देते हैं। और, 20 नवम्बर को जो पे-स्लिप दी हैं उनमें प्रत्येक में पी.एफ. राशि 780 रुपये दी है जबकि अब तक तनखा अनुसार 1000 से 2000 रुपये पी.एफ. राशि रहती थी। तीन-चार वर्ष पहले यूनियन चुनावों में नये मजदूर खड़े हुये थे, उन्हें मैनेजमेन्ट ने धमकाने वाले पत्र दिये, वे चुनाव से हट गये थे। तब से यूनियन के पुराने लीडर ही हैं — यूनियन का कोषाध्यक्ष जो कि कम्पनी का वेन्डर भी था वह मजदूरों द्वारा बार-बार जलील किये जाने पर दो महीने पहले छोड़ गया। मैनेजमेन्ट चार वर्ष से बहुत ज्यादा पूजा-पाठ, हवन, जगराता, कीर्तन करवा रही है। मैनेजिंग डायरेक्टर शनिवार को काले कपड़ों में आता है। रिक्शा पर देवता रख कर फैक्ट्री के अन्दर चक्कर कटवाते हैं। कम्पनी की राजस्थान में भिवाड़ी स्थित नई फैक्ट्री भी डगमग है।''

हाई टेक गियर मजदूर : ''प्लॉट 24-25-26 सैक्टर-7 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-13-14-15 नवम्बर (बाकी पेज तीन पर)

निमन्त्रण

आज विश्व के सात अरब लोग कई तानों-बानों से जुड़े हैं। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। दिसम्बर में 30 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

फैक्ट्रियों-कार्यस्थलों....... (पेज दो का शेष)

की दिवाली पर छुट्टी थी परन्तु दिवाली से पहले बोनस नहीं दिया और बोले कि 16 नवम्बर को देंगे। इस कारण बहुत-से मजदूर छुट्टियों में घर नहीं जा सके। एक सौ स्थाई मजदूरों को 16 नवम्बर को बोनस में 8400 रुपये से अधिक दिये जबकि दो ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूरों को 3600 रुपये ही दिये। वैसे ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 400 थे पर इधर एक तो काम मन्दा है और फिर खराब क्वालिटी के कारण 3-4 महीने से *मारुति सुजुकी* कार के गियर बनाना बन्द है। अभी *हीरो* और *होण्डा* दुपहियों के गियर ही बनते हैं। प्रोडक्शन लाइन पर 8½, 8½ और 7 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं। हीट ट्रीटमेन्ट और एस सी एम में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

पिज्जा हट श्रमिक : "गुड़गाँव में सैक्टर-44 में आर जे कॉर्प की इमारत में कार्यालय वाली ***देवयानी इन्टरनेशनल*** ने पिज्जा हट, के एफ सी, कोस्टा कॉफी आदि की फ्रेन्चाइजी ली हुई हैं। गुड़गाँव में पिज्जा हट के 18 आउटलेट हैं और एक आउटलेट में 40-50 वरकर। मजदूर की भर्ती टीम मेम्बर के तौर पर करते हैं। सब मिला कर महीने के 6500 रुपये देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं। पी.एफ. राशि 3460 रुपये पर काटते हैं और ई.एस.आई. राशि 5771 रुपये पर काटते हैं। हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम राशि पर पी.एफ. काटने वाला कम्पनी द्वारा किया जा रहा यह गड़बड़झाला मजदूरों की ग्रेच्युटी राशि के एक हिस्से को हड़पने की राह भी है।"

लखानी वरदान समूह कामगार : "प्लॉट 131, 136, 144, 160, 265 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित समूह की फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्ट की तरफ से 20 प्रतिशत की जगह 8.33 प्रतिशत बोनस की बात आई तो मजदूरों ने विरोध किया। जनरल मैनेजर द्वारा 5 नवम्बर को यह कहने पर प्लॉट 265 में मजदूरों ने कटिंग विभाग में काम बन्द कर दिया। दो जिप्सियों में पुलिस 6 नवम्बर को फैक्ट्री में आई। उत्पादन बन्द। एक सौ के करीब पुलिस वाले 8 नवम्बर से फैक्ट्रियों में। चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर 9 नवम्बर को प्लॉट 265 में आया तो मजदूरों ने उसे घेर लिया। दो सौ पुलिस वाले फैक्ट्री के अन्दर पहुँचे जहाँ 400 महिला मजदूर और 400 पुरुष मजदूर साहब को घेरे थे। प्लॉट 131, 136, 144, 160 स्थित फैक्ट्रियों के मजदूर प्लॉट 265 के गेट पर एकत्र। रात 9 बजे पुलिस ने लाठीचार्ज और गाड़ी की पाइपों से पानी की बौछार कर साहब को मजदूरों के घेरे से निकाला। दस नवम्बर को सुबह मजदूर फैक्ट्रियों पर पहुँचे तो वहाँ गेटों पर ताले और पुलिस मिली। कई मजदूरों ने 8.33 प्रतिशत बोनस ले लिया पर प्लॉट 131 के मजदूरों ने आज 17 नवम्बर तक नहीं लिया है और हिसाब माँग रहे हैं। पिछले वर्ष 8.33 प्रतिशत बोनस की घोषणा पर हुये मजदूरों के विरोध के बाद कम्पनी को बीस प्रतिशत बोनस देना पड़ा था। लखानी वरदान समूह की फैक्ट्रियों में अक्टूबर की तनखा आज 17 नवम्बर तक नहीं दी है।" ***किरण उद्योग वरकर :*** "प्लॉट 4 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 4850 रुपये — जुलाई से देय डी.ए. के 120 रुपये नहीं दे रहे।" ***अग्रवाल इंजीनियरिंग मजदूर :*** "बी/सी नोरदर्न कॉम्पलेक्स, मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में महिला हैल्परों की तनखा 3500 रुपये और पुरुष हैल्परों की 4200 रुपये। ऑपरेटरों की तनखा 4700 रुपये। सुबह 7½ से रात 8 की शिफ्ट, महीने के तीसों दिन, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ ***आयशर, महिन्द्रा, एस्कोर्ट्स*** ट्रैक्टरों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं।"

एस्कोर्ट्स श्रमिक : "प्लॉट 114 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित कम्पनी के सी एच डी प्लान्ट में कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करने की बजाय सिंगल रेट से करते हैं।"

साँवलेपन को कहिये : हाँ, हाँ, हाँ ।
काला रंग एक सुन्दर रंग है ।
और, उपमहाद्वीप में तो : शिव काला, राम काला, कृष्ण काला ।

●1 अक्टूबर 2012 से ***दिल्ली सरकार*** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक को मासिक 7254 रुपये (8 घण्टे के 279 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 8008 रुपये (8 घण्टे के 308 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8814 रुपये (8 घण्टे के 339 रुपये)। एक पता : श्रम आयुक्त, दिल्ली सरकार, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली—110054 ●***हरियाणा सरकार*** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.7.2012 से : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4967 रुपये ; उच्च कुशल मजदूर 5617 रुपये। एक पता: श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ ।

युवा मजदूर

मेरी आयु 19 वर्ष है और मैं अपने को अनुभवी मजदूर मानता हूँ। कई फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ। आजकल बैठा हूँ — सही से काम नहीं मिल रहा। जहाँ भी जाता हूँ वहाँ 12 घण्टे की ड्युटी बोलते हैं और अधिकतर जगह रात की शिफ्ट भी होती है। सर्दियों में रात को ड्युटी ही बहुत ज्यादा मुश्किल होती है। काम की पूछने मैं वहाँ तो जाता ही नहीं जहाँ हाथ-वाथ कटने का काम हो। बाकी जगह पहली बात मैं यह देखता हूँ कि रात की ड्युटी नहीं हो — गर्मियों में तो रात को काम फिर भी चला लूँगा पर सर्दियों में बिलकुल नहीं। इधर इन्डस्ट्रीयल एरिया में काम ढूँढने मैं नहीं जाता क्योंकि यहाँ ज्यादातर फैक्ट्रियों में सरकारी ग्रेड नहीं देते। ब्रॉन लैबोरेट्री में मैं डेढ साल काम कर चुका हूँ। मुझे तब 8 घण्टे के 100 रुपये देते थे और अब वहाँ काम कर रहा एक लड़का बता रहा था कि 8 घण्टे के 140 रुपये देते हैं।

मैं कोशिश करता हूँ कि ड्युटी 8 घण्टे की ही करूँ पर यह मिलनी बहुत मुश्किल है। मैंने लखानी के प्लॉट 265 सैक्टर-24 में 11 महीने इसीलिये काम किया कि वहाँ 8 घण्टे की ड्युटी थी और कभी-कभी दो घण्टे ही ओवर टाइम के लिये रोकते थे। लेकिन वहाँ तनखा मिलने में बहुत झँझट था, बहुत देरी से पैसे देते थे इसलिये वहाँ काम छोड़ा। बरसात में मुझे एक महीने खाली बैठना पड़ा था.....बरसात में काम कम हो जाता है, दिक्कत होती है तब भी हम नहीं छोड़ते।

मैंने अभी वाई एम सी ए चौक वाली इम्पीरियल ऑटो से रबड़ के धुँयें के कारण नौकरी छोड़ी है। फैक्ट्री में सुबह 7½ से रात 7 की शिफ्ट थी और ग्रेड देते हैं पर ओवर टाइम के पैसे बहुत-ही कम, मात्र 12 रुपये एक घण्टे के। वहाँ साथ काम करते एक 25-26 वर्ष के ने बताया था कि कहीं भी चले जाओ, अब 12 घण्टे से ड्युटी कम नहीं है। वह उत्तर प्रदेश का रहने वाला था और राजस्थान में कई जगह काम कर चुका था, उसके गाँव के लड़के मुम्बई में काम करते हैं।

परमानेन्ट होंगे ही नहीं इसलिये कई जगह लड़के सुपरवाइजरों से भिड़ जाते हैं। कौन-सी पक्की नौकरी है, छोड़ देते हैं, दूसरी जगह लग जाते हैं। डाँट-डपट सहते नहीं।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं।

जुड़ने-जोड़ने के लिये
मजदूर हितैषी मजदूर

लक्षय है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें, सहयोगी बनें

जो मजदूर इन मामलों को उठाना चाहते हैं : 1. सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देना; 2. आठ से ज्यादा घण्टे काम करवाना और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से नहीं करना; 3. स्थाई काम के लिये अस्थाई मजदूर रखना; 4. कानून द्वारा निर्धारित समय पर तनखा नहीं देना; 5. ई.एस. आई. कार्ड नहीं देना; 6. पी.एफ. नम्बर नहीं बताना, पी.एफ. की रसीद नहीं देना, फण्ड निकलवाने का फार्म नहीं भरना, फार्म जमा करवाने के बाद महीने के अन्दर पी.एफ. कार्यालय द्वारा भुगतान नहीं करना; 7. एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरना; 8. अन्य.......

*अकेले अथवा समूह में इन सवालों को उठाने वाले मजदूर संगठन से सम्पर्क करें। "अकेले क्या कर सकते हैं ?" का एक उत्तर **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन से जुड़ने में है।*

*कानूनों के उल्लंघन को उजागर करना स्वयं में एक दबाव लिये है। **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन सम्बन्धित विभागों में हर स्तर पर मामलों को उठायेगा। संगठन सभी विकल्पों का इस्तेमाल करेगा।*

---

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का।..... भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है।..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. ....हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है।

4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर..... *मजदूर हितैषी मजदूर* संगठन का गठन कर रहे हैं।.......

8. *मजदूर हितैषी मजदूर* संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। "समय नहीं है" के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है।

फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब "मजदूर मोर्चा" के सम्पादक हैं। फोन : 9999595632

फैक्ट्री रिपोर्ट
शाही एक्सपोर्ट

शाही एक्सपोर्ट मजदूर : "15/1 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में दो-ढाई हजार मजदूर हैं और इन में 75 प्रतिशत महिला मजदूर हैं। दिवाली से पहले कम्पनी ने 500 मजदूर नौकरी से निकाले....... 'मैडम, आजकल ज्यादा पानी पीने जाती हो' – कार्ड नम्बर लिख लेते हैं। किसी दिन ड्युटी के लिये पाँच मिनट देरी से पहुँचने पर – कार्ड नम्बर लिख लेते हैं। इमरजैन्सी में (मैनेजमेन्ट की भाषा में बिना बताये) छुट्टी करने पर – कार्ड नम्बर लिख लेते हैं। कार्ड नम्बर लिखना मानी अन्तिम चेतावनी। ब्रेक करने का, निकालने का मैनेजमेन्ट का यह तरीका है।

"दिवाली बाद 15 नवम्बर को फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ हुआ और तभी से नई भर्ती चालू। भर्ती के लिये पूरे दिन ट्रायल पर रखते हैं – 8 घण्टे काम करवाते हैं। ट्रायल में फेल तो बाहर और पास तो अन्दर। पास हो चाहे फेल, ट्रायल के नाम पर करवाये 8 घण्टे काम के पैसे कम्पनी नहीं देती। जो मजदूर इसी फैक्ट्री में काम कर चुकी हैं उनकी भी फिर भर्ती के समय ट्रायल ली जाती है – कम्पनी 8 घण्टे मुफ्त में काम करवाती है। किसी-किसी दिन तो ट्रायल के लिये 100 मजदूर 8 घण्टे खटते हैं। अब जिन्हें भर्ती कर रहे हैं इन्हें अप्रैल से जून तक निकाल देंगे। फिर इसी प्रकार ट्रायल से नई भर्ती मई-जून में करेंगे और उन्हें दिवाली से पहले निकाल देंगे।

"नौकरी से निकालते समय मजदूर का ए टी एम खाता कम्पनी बन्द कर देती है। मई-जून और अक्टूबर-नवम्बर में जिन 1000 मजदूरों को 5-6 महीने काम करवाने के बाद मैनेजमेन्ट निकालती है उन मजदूरों को बोनस नहीं दिया जाता। हर वर्ष इन 1000 मजदूरों का बोनस शाही मैनेजमेन्ट खा जाती है। और, दिवाली पर 500 मजदूरों की मिठाई कम्पनी खा जाती है।

"ठेकेदार भी हैं पर इनके जरिये रखे मजदूर कम हैं। अधिकतर मजदूर कम्पनी स्वयं भर्ती करती है। जो मजदूर दिवाली से पहले नहीं निकाले उन्हें बीस प्रतिशत बोनस दिया – उपस्थिति अनुसार 10,000 से 13,000 रुपये दिये।

"फैक्ट्री में ***ओल्ड नेवी, एच एण्ड एम, जे सी पैनी, टॉमी, टारगेट*** आदि के लिये सिले-सिलाये वस्त्र तैयार किये जाते हैं। हर वर्ष सितम्बर में सीजन शुरु होता है तब ओवर टाइम ज्यादा लगता है। ओवर टाइम का भुगतान कम्पनी दुगुनी दर से करती है। तनखा कम है, सिलाई कारीगर की 5258 रुपये, इसके बावजूद ओवर टाइम के चक्कर में कई मजदूर इस फैक्ट्री में रुके रहते हैं। इस वर्ष ओवर टाइम बहुत-ही कम है। सिलाई विभाग में तो अक्टूबर में रविवार वाले साप्ताहिक अवकाश के अलावा मजदूरों को 6-8 दिन की छुट्टी दी। पिछले वर्ष इन महीनों में पुरुष मजदूरों का महीने में ओवर टाइम 7 से 10 हजार रुपये का था और महिला मजदूरों का 3 से 5 हजार रुपये का। अब नवम्बर में पुरुष मजदूरों के ओवर टाइम के 3000 रुपये और महिला मजदूरों के 1000-1200 रुपये बने। इसका मतलब तो यह है कि आर्डर कम हैं।

"अक्टूबर माह में सिलाई विभाग में जो 6-8 दिन की छुट्टी की थी उसके पैसे कम्पनी ने मजदूरों को दिये। लेकिन नवम्बर में रोज ड्युटी के बाद 1½-1½ घण्टे रोक कर 6-8 दिहाड़ी काम करवाया। अतिरिक्त समय वाले यह 1½-1½ घण्टे ओवर टाइम था पर कम्पनी ने इन्हें ओवर टाइम नहीं माना। नवम्बर में करवाये इस ओवर टाइम को अक्टूबर की भरपाई कहा गया और भुगतान सिंगल रेट से किया।

"ओवर टाइम कम का एक कारण टारगेट ज्यादा होना भी है। टारगेट पूरा करवाने के लिये सुपरवाइजर चिल्लाते हैं और गुणवत्ता के लिये क्वालिटी कन्ट्रोलर चिल्लाते हैं, नौकरी से निकाल देते हैं। अक्टूबर माह में फैक्ट्री के बाहर रात के समय हाकियों से एक क्वालिटी कन्ट्रोलर को पीटा गया। दोनों हाथ टूटे – रॉड डालनी पड़ी। नवम्बर के आखिरी दिनों में वह क्वालिटी कन्ट्रोलर ड्युटी पर आया है। अक्टूबर से फैक्ट्री में साहबों का चिल्लाना कम है।

"शाही एक्सपोर्ट कम्पनी की नोएडा, दिल्ली में ओखला और फरीदाबाद में सैक्टर-28 तथा सराय ख्वाजा में भी फैक्ट्रियाँ हैं।" ♦

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14